"नवभारत टाइम्स" (दिल्ली), छह जून, १९८९

अर्जेण्टीना में लूट और अव्यवस्था



अर्जेन्टीना के रोज़ारियो शहर में तीन दिन की अशांति के दौरान लूटपाट करने वाले युवकों को खदेड़ते हुए एक फौजी।

पिछले सप्ताह अर्जेंटीना की राजधानी ब्यूनस आॅयर्स और सबसे बड़े शहर शेसारियो में सैकड़ों भूखे-प्यासे लोग अनाज की दुकानों पर टूट पड़े। चावल की बोरियां और खाने-पीने के अन्य सामान लूट लिए फर्नीचर व कई उपयोगी चीजें तोड़ दीं तथा दुकानों में आग लगा दी।

लोग बिस्कुट, पावरोटी, मक्खन और चाकलेट के डिब्बे लेकर इस तरह बेहताशा भाग रहे थे कि पुलिस के लिए स्थिति पर काबू पाना कठिन था। कई जगह हाथापाई की नौबत आई और सैनिकों द्वारा आंसू गैस छोड़ने और रबड़ बुलेट छोड़े जाने के बावजूद लोग लूटमार में लगे रहे।

राजधानी के श्रमिक बहुल उपनगरों में पुलिस ने करीब २७० लुटेरों को गिरफ्तार किया जिनमें अधिकांश महिलाएं और बच्चे हैं। वे ब्यूनस आॅयर्स के मुख्य बाजार 'सुपरमार्केट' से खाद्य सामग्रियां चुराकर भाग रहे थे।

क्रोध में गालियां बकते लोगों ने पुलिस की चेतावनी के जवाब में कुर्सियां, टेबुल और बेंचें फेंकी। संघर्ष में दो व्यक्ति मारे गए और ४५ अन्य घायल हो गए। लूट-खसोट तो वैसे एक ही साथ पूरे प्रदेश में शुरू हुई लेकिन ब्यूनस आॅयर्स और शेसारियो में लोग सबसे ज्यादा उत्तेजित थे। पुलिस के मुताबिक सिर्फ राजधानी में ही ८०० से ज्यादा लोगों को हिरासत में लिया गया। वहां जब व्यापारियों ने लोगों को अपने गोदामों में घुसने से रोका तो लोगों ने पेट्रोल छिड़ककर माचिस की तीलियां फेंक दीं।

हालात ऐसे पैदा हो गए कि राष्ट्रपति रॉल एलफोंसिन ने देश में सैनिक शासन की घोषणा कर दी (२७ मई) और भयंकर आर्थिक संकट का सामना करने के लिए आपतकालीन तौर-तरीके अपनाने का भी एलान किया।

पिछले २० वर्षों में अर्जेंटीना की इतनी दयनीय आर्थिक स्थिति पहले कभी नहीं हुई। मुद्रास्फीति पर काबू पाना कठिन हो रहा है। घरेलू सामानों और दवाओं की इतनी किल्लत हो गई है कि बाजारों में डूंडे नहीं मिलता। छोटे-मोटे सामानों के लिए भी लोगों को कई किलोमीटर का चक्कर लगाना पड़ा है। २७ मई को सरकार ने चावल की कीमत बढ़ाई और उसके साथ ही चारों तरफ बलवे शुरू हो गए। आजादी के बाद से अर्जेंटीना के इतिहास की यह पहली घटना है जब खाद्य सामग्रियों को लेकर पूरे देश में लूटमार मची हुई है।

सैनिक शासन लागू होने के बाद से लोगों की हालत और भी खराब हो गई है। २८ मई की तरह फिलहाल लूट-पाट तो नहीं हो रही लेकिन लोगों में गुस्सा और झुंझलाहट बरकरार है। एक मई को चावल खरीदने के लिए लोगों को क्यू में खड़ा रहना पड़ा। उसके बावजूद पीछे खड़े कई लोग खाली हाथ घर लौटे। सुपरबाजारों से सामान गायब है।पूछने पर बताया जाता है कि सब कुछ लूट लिया गया।

वकील सान एस्टबैन बताते हैं 'लोगों ने शौक से लूटपाट नहीं की, बल्कि इसलिए क्योंकि वे भूखे हैं, उनकी हालत अत्यंत दयनीय है। सरकार की ओर से परिवारों को नमक, चावल, तेल, दूध और आटा नियंत्रित परिमाण में दिया जा रहा है लेकिन लोग इससे बेहद नाराज हैं। जोस लेबेन्स का कहना है कि 'उन्हें काम चाहिए, काम, दान नहीं।' दूसरी ओर पैसे हाथ में लिए लोग घूम रहे हैं, बाजार में सामान नहीं। बड़े व्यापारियों ने सामान छुपा रखा है, कई कारखाने बंद पड़े हैं। लोग काम करना चाहते हैं लेकिन उनके पास काम नहीं।

पश्चिमी देशों की दया पर टिके राष्ट्रपति एलफोंसिन के सत्ता में बने रहने के अब कुछ ही दिन शेष रह गए हैं। १४ मई को राष्ट्रपति पद के लिए हुए अप्रत्यक्ष चुनाव में विपक्षी उम्मीदवार पेरोनवादी कार्लोटा मैनेन ने विजयी होने का दावा किया। राष्ट्रपति पद की शपथ लेने से पूर्व उन्हें ६००-सदस्यीय निर्वाचन मंडल के करीब ३०० सदस्यों का समर्थन चाहिए। राष्ट्रपति का अंतिम रूप से चुनाव करने के लिए निर्वाचन मण्डल की बैठक अगस्त के मध्य में होगी।

□ शशिधर खां